

40

age

304

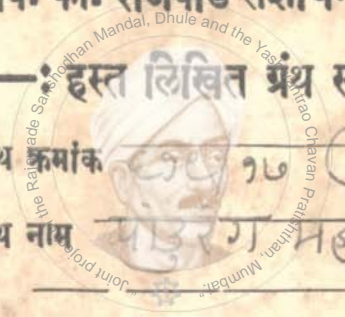
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक १७ (८२२)

ग्रंथ नाम पांडुरंग महात्म्य.

विषय माहात्म्य.



आ ①

१

७

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

ॐ नमो जिमंगलरूपा ॥ विघ्ननाशाज्ञानदिपा

विघ्नव्यापकावामुपा ॥ करिक्रुपामजबेरि ॥ १ ॥

चेलुभजालेजपुजा ॥ आपारमहिमाविस्व

विजा ॥ आनुग्रहघडलालुशासनोरथमाशा

सिद्धिपानो ॥ २ ॥ पावेआजिसंकटहरणा

करुणालयागजेवदना ॥ शरणाआलोक

(2)

रि करूणा ॥ लुझिया चे रना दंडवंत ॥ ३ ॥ आ
जि सकटि पावे दिना ॥ सिवलन या मुशक
वहना ॥ सिनला से ज करिता सवना ॥ नकळे
पुर्ण पारलु झा ॥ ४ ॥ मि प्रा क्रु ल बहु सां बडे ॥ आ
१ ज्ञान के वळ वे डे ॥ ले लु फे डि मा से सां कडे ॥ ज्ञान
धड पुडे मज दे ई ॥ ५ ॥ ह्य लो नि म स क टे वि
ला चे रणा ॥ म ग आ व लो कि ले क्रु पा व चे नि

आ

ध

ह्यलेवदकारेवानि॥सिधीनेलो॥ध॥ह्यलोनि १
चेरनिटेविलाकर॥प्रकाशलाज्ञानसागर
॥देवादिदेवलंजोदर॥मजवरिक्रुपालुजाळा
॥७॥लेवागेस्वरिसरस्वलि॥जाळाआलानुमुले
मंगळधनि॥आनुहालसारदाभवानि॥लेआ
दिप्रालाजेननि॥त्रैलोक्येपालनिविस्वनिजा॥
च॥लेवागेस्वरिसरति॥जाळिनवरसतोप्र

(2A)

(3)

स व लि ॥ वि ला पु स्त क शो भे ह्म लि ॥ भ व भ्वा लि
 छे द क ॥ ८ ॥ ले मु ष मा या आ दि शो कि ॥ स गु
 ल्य रू पे आ लि व्ये कि ॥ लि चि भा वे करि भ
 कि ॥ त्रि जे ग लि वं द्ये ह्ये ॥ १० ॥ ले प्रा ह्म प्रा
 या आ दि बि ज वि स्व रू पे ले ज पुं ज ॥ करि
 उ द्द र म ज ॥ चिं लि ं ध्या का र्या सि सि धी पा
 वे ॥ ११ ॥ लि ने दि ध ल्ते म ज व र दान ॥ दान

आ

१

१

पात्रि मिआशान ॥ लोडिले मा शेभवबंधन ॥

केला उधार सकुळेसि ॥ १२ ॥ आलान मुश्री

गुरुबोध ॥ आक्षे ररूपांनदा ॥ विस्वा

धाराजगप्रसिधा ॥ निर्द्वानि गुंला रूपा ॥

१३ ॥ गुलातिला लुनि गुंला ॥ लुज वदिताना

हिक वन ॥ निगमा गम्य लुजा ला ॥ किलिको

एवर्णिल ॥ १४ ॥ लुमन बुधिना कळसि

(३A)

(७)

ना ज रूपाले प्र कासिसि ॥ परापररूप
रियेसि ॥ लुझिया रूपासि नाहि गलना
॥ १५ लुक्ष राक्ष रभा मप ॥ मोक्ष रूपाज्ञा
नदिपा ॥ लुवांकेलि मजवरिकुपा ॥ पु
न्ये पापानि दाले नि ॥ १६ ॥ पुर्नकुपा गु
रुवरदाना ॥ पुटे दे शिव ले साधुजन ॥
मगघाल ले लो ठा गन ॥ संत सजेन भा

३

आ

ध
२

त्रिका ॥ १७ ॥ सलक्रुपाजाति या पुर्न ॥ सा
गात्रिकथा निरोपन ॥ पठरि माह्रुप्रु
न्यपावन ॥ करि उ धार स्ररनमात्रे ॥ १८
कोन्हेये के आव स्वरि ॥ ना मा आला
पंठरपुरि ॥ लेथिल म ह्रि मा आ गा
ध थोरि ॥ शशर्वे खरिन व वे लवे ॥
१९ ॥ स्वग मृ सुफालाळि ॥ हे सु खना

(५१)

हि कोन्हे स्त्रलि ॥ दे सेना माले वेळि ॥ आनं
 द जळि बुडाळा ॥ २० ॥ म ग पा हु ला ग ला
 आ व लो कु नि ॥ धन्ये धन्ये धन्ये हे प
 ५ वि त्र ये व नि ॥ ज वि प्रां ति चे स क ल
 सो स्य स्त्रा नि ॥ सं ति ये उ नि वा स कि जे
 ॥ २१ ॥ धन्ये धन्ये पुन्य प वि त्र ॥ औ से
 स्त्र ल हे वि चित्रा ॥ पु क स क र दि का

४

आ

१
आःहादथोर॥ ये लिसुरवर आहि
नेसि॥ २२॥ धन्यधन्यहे जन्पावन॥
सदापठरपुरि राहने॥ नरकरि
लिःज्ञानजगदो धारनहो ये जन्
जेथे २३॥ धन्ये धन्यपुन्ये कसि॥ दश
नहो ये जगासि॥ माह्रदोसि पापियासि
॥ जालि दशन मात्रे॥ २४॥ आनंतजे

ध

१

(५८)

(6)

५

जन्माचे संचित ॥ माहापाप जोडले दु
स्कूल ॥ लोहिपठरिसये वृरिल ॥ लरि
मिरासिले येवे कुठिचा ॥ २५ ॥ बहुपाणि
आनाचारि ॥ आघोरधर्मदुराचारि ॥ लया
प्राप्तलेयपठरि ॥ पुनरूपिनयेतो संसा
रिनयेतो ॥ २६ ॥ जीवहासारिमासवि
त्रि ॥ परघालकिपरदारि ॥ सुवर्नचो

५

आ

ध्या

१

र गो हारि ॥ आथ वा त ध करि गोत्र जा
चा ॥ २ ॥ सा धु ब्राह्मना चि नि दा करि ॥ स्व
धर्म भंगि वा ल हा थारि ॥ ने म भा क मो
डि सं सा रि ॥ आथ वा करि लि थ वि करा
२८ ॥ मा हा प र् व का लि पु न्ये क्षे त्रि ॥ नि
च व र्ना चै दान सि वा रि ॥ क न्या द्र व्ये
(६०) छे सं सा रि ॥ आ थ वा प र गू हि आ म्नी

(१)

८१ वि॥२८॥ गुण दोश पाहे सं सारि
॥ धर्म करि या सि नि वारि॥ निद्रि स्ता
६ चा व ध करि॥ लो हि सं सारि मा ह्य पा वि ६
॥३०॥ वि स्म यो वा टे ना प्र या सि॥ ह्य द्यु
छाल दे उ क्तो न्हा लि था सि॥ क्षि र सा ग
र आ न वे कु ठ सि॥ स प्र कु ळे सी हो र्द र्द
ना॥३०॥ ज न्म म र ना सि नि वा र ने॥ दु

(५)

पा जो ॥ जा एग पाहो सा धु संला ॥ ३४ ॥ या

गुनि नि भा व वि स्वा स ॥ करू जा लि सा

धन आ भ्या स ॥ लो प्रा र्ग प डि ला जो स

॥ जा ला दु र वा स आ धी का रि ॥ ३५ ॥ सु

ख ल रा व या का र ए ॥ ये क भा वा र्थ

चि जा ए ॥ भा वे के ले भ ज न ॥ ले ना ग

व न रो क डि ॥ ३६ ॥ सु ल भा वा र्थ लो

आ

ध्या

१

चि दे व ॥ भा वा थ लो चि स ङ्ग रू रा व
॥ भा वा वे ग ळा ना हि ळा व ॥ ल रा व या
त्रि लो की ॥ ३७ ॥ भा वा थ ध रू नि प्रा
न सि ॥ ना प्रा रा हि ळा पं ठ र पुरे सि
॥ म ग वि चा रि प्रा न सि ॥ हे सु ख वे
ठां के सि ना हि ॥ ३८ ॥ म ग ना म या ने
के लै श्मान ॥ को टि कु ळा हो ये उ धा

(8A)

रण॥ जन्म मरणाहोय निवारण॥
 लुटेळ बंधन संसारिचे॥ ३५॥ ये
 थे जे लि या ये क स्नान॥ प्रे मे घाल
 ८ ले लो हा गण॥ सि रि वं दि ले वि उल्ल
 चे रण॥ अणे दिन मि लु शे प ठ रि रा
 या॥ ४०॥ अ ने जा हे दा ला रा॥ ज ग दु
 रू ज ग दो धा रा॥ ज ग जि व ना रू कि म

आ

१

६४

१

निवरा॥ विनंति आव धा रा देव रा या॥

५१॥ आ हो स्वा मी दे वा धि दे वा॥ वि स्व

प्र यो वा टे प्रा णि या जि वा॥ लो सं दे हे

के टा वा॥ प्र ज सा गा वा वि चा रू॥ ५२॥

लु हि म यु गे आ टा वि स॥ प ठ रि स करि

ता वा स॥ हे क ठे ज गा स॥ आ नि सं ल

भा वि का॥ ५३॥ लु से आ ग नि ल आव

(१५)

(१०)

ला र ॥ सां ग लि सा धु मु ने श्च र ॥ ल रि ॥
हे आ ठा वि स यु गे पं ठ र पुरा ॥ हा नी चा
र सां गा वा ॥ ४४ ॥ यु गे आ ठा वि स वा
९ र्त्वा ॥ प ठ रि चि ले क लो क था ॥ ल या पु र्ति
ल स म्प र्था ॥ र च ना आ ला सा गा वि ॥ ४५
य श्चि ल पु न्य न ये ग न ने सि ॥ हे उ ध रि
ज ग जां सि ॥ यु गे आ ठा वि स के सि ॥ सां

आ

ध्या

ग लाज गासि देव राया ॥ ५६ ॥ या पुर्विया
सुखि ॥ का ये हो ले गावन प्राळि ॥ ले आधि
मज समुळि ॥ आजि रा उळि सा गावे ॥ ५७
॥ हे के से जाळे नि मनि ॥ को ने के सां के का
ये हा ॥ हे प्राहा मुकि ये सुगन ॥ स्वामिनि रो
पन सा गावे ॥ ५८ ॥ हे ओ का व या ॥ बहु उता
वि ले मां शे मन ॥ स्वामी आजि नि रोपन

(10A)

(11)

स वि स्ता रूनि सां गा वे ॥ ५८ ॥ ओं को नि नामि

या चे बो लने ॥ दे व हा सि न ला आ पन ॥ म

ग दि ध ले जि व नि ब ले न ॥ उ ल रि ले ॥ ५०

७० ह्य ने भ क रा जा सु सि का ॥ आ ल रं ग आं ७०

आ स सि प्र ब वा ॥ प्रि लि पा त्र ल डि वा का

से वि स र्व का ष ह्य र सा ॥ ५१ ॥ ह्य लु शा

प्र स्था ओं को न ॥ ना म या मा शे सं लो सं ले



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com